विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है

प्रकृति और मानव एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। मानव के मनुष्य के जन्म के साथ ही उसका प्रकृति से निकट का सम्बन्ध जुड जाता हैं। प्रकृति अपनी चीजों का उपभोग स्वयं नहीं करती। हमारी आधारभूत जरूरतें जैसे हवा, पानी, भोजन आदि सभी प्रकृति से ही प्राप्त होते है साथ ही प्रकृति ने हमें कई प्रकार के फूल, पक्षियां, पशु, पेड़ पौधे, नीला आकाश, ज़मीन, नदिया, समुद्र, पहाड़, प्रदान किया है। जिससे मनुष्य एक बेहतर और अच्छा जीवन व्यतीत कर पाता है।

यह कहा जा सकता है प्रकृति ही मानव का पोषण करती आई हैं। मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यदि मनुष्य प्रकृति के साथ छेडछाड करता रहा तो प्रकृति भी एक दिन इंसान के वजूद के साथ छेडछाड शुरू कर देगी । मनुष्य का यह शरीर भी प्रकृति के पाँच तत्वों से मिल कर बना है, वायु, अग्नि, जल, आकाश, मिट्टी और फिर यह प्रकृति हीं इस शरीर को वापस अपने में मिला लेती है। हम पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को जारी रखना चाहते हैं तो प्रकृति का संतुलन हर हालत में बनाये रखना होगा। यदि प्रकृति के अनुरूप हमने अपने आप को ढाल लिया तो ठीक नहीं तो अस्तित्व समाप्त होने का खतरा उत्पन्न हो जायेगा।

प्रकृति व पर्यावरण एक–दूसरे के पूरक हैं। प्राकृतिक संपदाओं के महत्व को समझना, उनका किफायती उपयोग करना, उनके संरक्षण को प्राथमिकता देना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। जल, जंगल और जमीन प्रकृति के तीन प्रमुख तत्व हैं जिनके बगैर हमारी प्रकृति अधूरी है। प्रकृति के इन तीनों तत्वों का इस कदर दोहन किया जा रहा है कि इसका सन्तुलन डगमगाने लगा है। प्रकृति के साथ हम बडे पैमाने पर छेडछाड कर रहे हैं, यह उसी का नतीजा है कि पिछले कुछ समय से भयानक तूफानों, बाढ़, सूखा, भूकम्प जैसी आपदाओं का सिलसिला तेजी से बढ़ा है।

हम प्रकृति की चिंता नहीं करते और यही वजह है कि प्रकृति ने भी अब हमारी चिंता छोड दी है। हमनें बिना सोचे–समझे संसाधनों का दोहन किया है। यही वजह है कि अब पर्यावरण का संतुलन बिगड गया है और बाढ़, सूखा, सुनामी जैसी आपदाएं आ रही हैं। बरसों से पर्यावरण को हम इंसानों ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। प्रकृति के साथ इंसान का लगातार खिलवाड एक भयानक विनाश को आमंत्रण दे रहा है, जहां किसी को बचने की जगह नहीं मिलेगी।

मनुष्य का प्रकृति से अटूट सम्बंध है। प्रकृति की रक्षा, उसके संरक्षण और विलुप्ति की कगार पर पहुंच रहे जीव-जंतु तथा वनस्पति की रक्षा का संकल्प प्रत्येक मानव का है। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है। इनमें मुख्यतः पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं।

जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं। प्रकृति पर मंडराता खतरा जस का तस बना हुआ है। सबसे बड़ा खतरा तो इसे ग्लोबल वार्मिंग से है। धरती के तापमान में लगातार बढ़ते स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते है।

वर्तमान में ये पूरे विश्व के समक्ष बड़ी समस्या के रुप में उभर रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण का ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। इसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे प्रकृति पर खतरा बढ़ता जा रहा है। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव–जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा।

मनुष्य का प्रकृति से अटूट सम्बंध है। प्रकृति की रक्षा, उसके संरक्षण और विलुप्ति की कगार पर पहुंच रहे जीव–जंतु तथा वनस्पति की रक्षा का संकल्प प्रत्येक मानव का है। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है। इनमें मुख्यत: पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़–पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

प्रकृति का संरक्षण हमारे सुनहरे भविष्य का आधार है। मनुष्य जन्म से ही प्रकृति और पर्यावरण के सम्पर्क में आ जाता है। प्राणी जीवन की रक्षा हेतु प्रकृति की रक्षा अति आवश्यक है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रजाति के जीव–जंतु, वनस्पतियां और पेड़–पौधे विलुप्त हो रहे हैं जो प्रकृति के संतुलन के लिए बहुत ही भयावह है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय–समय पर प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ खिलवाड होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमें शुद्ध पानी, हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध पर्यावरण, वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा।

हमारा शरीर प्रकृति के पांच तत्वों से मिल कर बना है। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तथा उससे अपनापन रखते हैं तो प्रकृति भी हमारे शरीर की रक्षा करेगी। हम अनेक प्रकार की बीमारियों से बचे रहेंगे। प्रकृति का संरक्षण मानव जाति का संरक्षण है क्योंकि ये प्राकृतिक तत्व ही हैं जो हमें जीवन देते हैं। ऐसे में यह समाज के हर व्यक्ति का दायित्व है कि वह अपने आसपास के प्रकृतिक संसाधनों की रक्षा करे।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

एक अनसुलझी बात

नाम जाने पहचाने हैं, त्रिकोण भी जगजाहिर रहा। किसी एक के प्रति मेरे मत की अभिव्यक्ति को अभद्र न माना जाय! स्वतंत्र मत रखने की मेरी लेखनी के मूल अधिकार को ध्यान में रख कर मेरी अनाधिकार सोच को क्षमा किया जाय!

मेरा अंतस अमृता की रूहानी छटपटाहट को समझ पाता है, इमरोज़ के समर्पण को भी, पर साहिर के confusion को नहीं!

आप सब की प्रतिक्रिया अपेक्षित है....

एक शायर, बहुत नामचीन, affluent, much in demand फिल्म जगत पर अपनी शायरी से छाये हुए,

दूसरा पेंटर...इतना मक़बूल नहीं, कुछ ही जानते होंगे इंद्रजीत पेंटर को!

अपनी लेखनी को अपने से भी ज़्यादा प्यार करने वाला शायर, जो सारी दुनिया से नाराज़! इसके रिवाज़ों रवायतों से शिकायत करता सा, कुछ लेफ्टिस्ट, सारी दुनिया से बग़ावत की उम्मीद रखने वाला, ख़ुद ही वो रवायतें न तोड़ सका..!

और ये पेंटर साहब अपनी कूंची को, जो उनकी रोज़ी रोटी भी थी, विश्राम दे कर अमृता के ड्राइवर बन गये। ये बिना शोर किए इन सारी जंज़ीरों जिन्हें जात पांत, समाज, रिवाज़ कहते हैं, तोड़ कर अपनी मर्ज़ी का एक रिश्ता गढ़ लेते हैं।

शायर प्यार तो करता है पर प्यार के ज़ख्म को भरना नहीं चाहता, कि कहीं शायरी कुन्द न हो जाये! उसे अपने बहुत हो गए नाम से प्यार है, कुछ अमृता के प्यार से ज्यादा!

पेंटर को सिर्फ अमृता से प्यार है, अमृता के नाम, उसकी शोहरत, अपना वजूद..किसी का भी दबाव उसके प्यार पर नहीं!

तू मेरा समाज मैं तेरा समाज
इससे ज्यादा और कोई समाज नहीं

शायर विधर्मी (मुस्लिम) है, intellectual भी!

सो धर्म परिवर्तन की बात नहीं कर पाते।

अमृता ने कहा भी और लिखा भी कि–

एक बार आवाज़ देते तो धर्म और मज़हब की सब दीवारें पार कर जाती

वो कायर रहे या समझदार, या बस बच के निकलना चाहते रहे, नहीं मालूम...

इमरोज़ लगातार एक ही आवाज़ देते रहे.. अमृता....अमृता और अमृता

ख़ाली कागज़ भी साफ़ दिल जैसा होता है, जिस पर लिख सकते हैं, अपनी जान किसी के नाम

और उसने अपना सारा वजूद ही अमृता के नाम लिख दिया।

अमृता ने कहा–

तुम्हारी जैसी सोच, तुम्हारी जैसी शख्सियत अगर इस दुनियां में न होती, तो तुम्ही बताओ कहाँ जाती मैं!

शायर और पेंटर....

दोनों शख्सियत बिलकुल अलग हैं, कुछ विरोधाभासी सी !

एक समर्पण मांग रहा..और उस मांग में भी दंभ है, हिचक भी है, डर है... धर्म मज़हब समाजो का! अपना अलग मुकाम, एक स्वतंत्र अस्तित्व, और पहले ही से _not so indianised image_ रखने वाली औरत का साथ मांगे या न मांगे..माँगना भी इस को शायद मंजूर न था!

अमृता ने लिखा–

साहिर की एक ख़ामोशी थी..जिसे मेरी जिंदगी के बरसों के बरस कभी समझ नहीं पाए

अपनी इस मांग को साहिर भी मैं खूबसूरत नहीं के कवच में लपेटे रहे।

उधर इमरोज़ ने कहा–

तेरी नज़र मुझे मेरी नज़र में ही खूबसूरत बना देती है

ये क्या था कि अमृता ने इमरोज़ का साथ चाहा? बेशक उन्होंने अपने प्यार को (साहिर के प्रति) कभी छुपाया नहीं।

प्यार में हारना ही जीत है।

ये क्या कि हम प्यार, इश्क़ की नाकामी को ही ज्यादा तवज्जो देते हैं!

जो प्यार में पा सका, उसका समर्पण, कमिटमेंट, dedication, emotional investment नाकामी के आंसुओं के सामने छोटा क्यों पड़ जाता है?

कुछ से ही रहे ये शायर, या कुछ कायर या कुछ ..!

इमरोज़ का प्यार सम्पूर्ण है, समर्पण अदभुद है। वो रिवाज़, समाज, जात–धर्म नहीं मानते। बस एक मनचाही सी जिंदगी उसे देना चाहते है जो उन्हें एक वायदा दे "सदा खुश रहने का"

कैसा प्यार,कैसी दीवानगी! वो जानते हैं, admit भी करते हैं कि..

रेडियो स्टेशन जाते समय पर बैठे मेरी पीठ पर ऊँगली से साहिर–साहिर लिखती रहती थी

ये कैसा पुरुषत्व है जो आहत नहीं होता, शिकायत भी नहीं करता, बस प्यार किये जाता है, और शिद्दत भी कम नहीं होती! किसी भी प्रेम करने वाले की नज़र में इमरोज़ प्यार में समर्पण को epitomise करते है। एक मुक्कमल इंसान..!

इमरोज़ एक अकेला इंसान..जो judgmental नहीं रहा। उसने अमृता को उसकी बेबाक़ी, सिगरेट और शराबनोशी से ऊपर देखा, जो बहुत sensitive थी, intelectual थी, इतने सारे तिरस्कार, तिर्यक नज़रों के दंश और व्यंग झेल चुकी थी पर अडिग थी अपने पर! वो झुक नहीं रही थी, पर टूटन के कगार पर थी। उसकी टूटन से (जो थी...she was under treatment for depression) क्या हो सकता था पता नहीं! कितनी भी कमज़ोर थी वो बांहे इमरोज़ की, पर अमृता का सम्बल बनी।

अमृता ने अपनी जिंदगी में आये तीनों संबंधों को बेबाक़ी से लिखा। उसका लेखक रूप बहुत चकाचौंध भरा था, औरत सदा दूसरे दर्ज़े पर ही रही।

शादी के बारे में उन्होंने Dr. Lateef को बताया कि "ब्याही जिंदगी में कोई तकलीफ़ न थी, पर अपना आप जिन्दा नहीं लगता"

कविता की तरह ही साहिर की तरफ उनका प्यार गहरा रहा, और लिखा

ज़ेहन में बसे हुए साये घर की छत नहीं बनते

साहिर की indecisiveness से थक गयी थी अमृता!

इमरोज़ जिसने अपना नाम इंद्रजीत से इमरोज़ रख लिया। फ़ारसी में जिसका मतलब होता है 'आज'

बीत गए और आने वाले कल से गैर बस 'आज'

मेरे अकेलेपन का शाप इमरोज़ ने तोडा है, ऐसा लिखा अमृता ने ।

क्या ये समाज अपने रास्ते बनाने वालों के प्रति सहिष्णु है? क्या गलत है, क्या सही है, क्या ये नजरिया वैयक्तिक नहीं हो सकता? अमृता के सन्दर्भ में कई प्रश्न अनुत्तरित ही रहे और इमरोज़ भी कई मायनों में इन प्रश्नों की धुंध में छुपे रहे।

–डॉ. सरोज आचार्य

सूरतगढ़ के नत्थूराम ने 50 बीघा जमीन धर्मार्थ ट्रस्ट को दान की

- **संस्कृत वैदिक स्कूल, गौशाला और मंदिर का होगा निर्माण**

सूरतगढ़, (निसं)। सूरतगढ़ के वार्ड 19 निवासी नत्थूराम स्वामी (62) पुत्र गजानंद ने शहर के पास ही मानकसर से सटी 50 बीघा जमीन एक धर्मार्थ ट्रस्ट को दान कर दी। शुक्रवार को रजिस्ट्रार कार्यालय में इसकी गिफ्ट डीड के डॉक्यूमेंट्स तैयार करवाकर ट्रस्ट के मुखिया को सौंपे गए। दान की गई इस भूमि पर जल्द ही आश्रम का निर्माण करने के साथ ही संस्कृत वैदिक स्कूल, मंदिर, गौशाला आदि का निर्माण करवाया जाएगा। इस अवसर पर स्वामी गुणप्रकाश चैतन्य महाराज ने उपस्थित लोगों को लड्डू खिलाकर मुंह मीठा करवाया। मौके पर सब–रजिस्ट्रार विनोद गोदारा, जगदीश कुमार, मुरलीधर पारीक, नरेश शास्त्री, सुमित गुप्ता, अमित कुमार, विमल सिंह, केके शर्मा, कुलदीप कुमार सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

स्वामी करपात्री फाउंडेशन मुंबई के अध्यक्ष गुणप्रकाश चैतन्य (42) पुत्र प्रबल सन्यासी ने बताया कि नासिक पंचवटी में महाकुंभ के दौरान इनका छोटा भाई आश्रम में रुका। इसी दौरान उसने 50 बीघा (2 मुरब्बा) भूमि दान देने का संकल्प लिया था। 2016 में 108 कुंडीय यज्ञ का आयोजन स्व. प्रबल जी महाराज के सानिध्य में संत प्रेम केश्वर महाराज और उनके सानिध्य में पशु चिकित्सालय में किया गया था। उस समय इस संबंध में चर्चा कर जमीन की खातेदारी करवाने की प्रक्रिया शुरू की थी। जिसकी पिछले दिनों खातेदारी मिलने पर आश्रम के नाम रजिस्ट्री करवाकर माता पिता का नाम अमर करने के लिए दान की है।

दानदाता नत्थूराम स्वामी ने बताया कि वो तीन भाई है और तीनों ही अविवाहित है। उम्र के इस पड़ाव में उनका मानना है कि उनके बाद इस संपत्ति को कौन संभालेगा, तो उन्होंने इसे धर्मार्थ के काम में दान देने की सोची और अपनी इच्छा से महाराज को अवगत करवाया। नत्थूराम ने कहा कि वे इसे अपने माता पिता की याद में ट्रस्ट को समर्पित कर रहे हैं।

दानदाता नत्थूराम ने बताया कि इससे पूर्व भी उनके एक भाई ने धर्मार्थ के काम के लिए कई बीघा भूमि दान की थी। ईश्वर में आस्था रखने वाले और पूजा पाठ करने वाले अविवाहित नत्थूराम ब्रदर्स की सूरतगढ़ शहर के मुख्य बाजार स्थित पुराने मोटर मार्केट के पास भी करोड़ों रुपए कीमत की दुकान है। वहीं मानकसर के पास दान की गई। इस भूमि की कीमत करोड़ों रुपए में शुमार है। ऐसे में उनके द्वारा नेकी स्वरूप किए गए इस कार्य की लोग प्रशंसा कर रहे हैं।

हरनौली हैड पर नहर का पुल ढहा, कई गांवों का संपर्क टूटा

- **ग्रामीण कर रहे मरम्मत के प्रयास, सिंचाई विभाग को जानकारी दी**
- **ग्रामीणों ने बताया कि पुल के टूटने के समय इस पर किसी वाहन अथवा व्यक्ति के नहीं होने से हादसा टल गया**

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के गजसिंहपुर इलाके में एफ नहर का गांव हरनौली हैड के पास पुल टूट गया। इससे कई गांवों का दूसरे गांवों से संपर्क टूट गया। जानकारी मिलने पर ग्रामीण मौके पर एकत्र हो गए। उन्होंने सिंचाई विभाग को घटना की जानकारी दी। वहीं खुद अपने स्तर पर भी पुल की तरफ आने वालों को रोका। इन लोगों ने वाहन चालकों को अन्य रास्तों से पास के गांवों को जाने के लिए कहा।

जानकारी के अनुसार गजसिंहपुर इलाके के गांव हरनौली के पास बना हरनौली हैड का पुल शुक्रवार सुबह अचानक ढह गया। इससे तेज आवाज हुई। आसपास के लोगों को जब इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने आसपास के गांवों के लोगों को इस बारे में सूचना दी। गांव हरनौली की तरफ आने वाले वाहनों के चालकों को भी अन्य रास्तों से जाने के लिए कहा गया। जिन गांवों तक जाने के लिए यह पुल एक मात्र रास्ता है, उनका अन्य गांवों से संपर्क टूट गया है। पुल टूटने से गांव तीन एफएफए, चार एफएफए, एक एफडी सहित कई गांवों से आसपास के अन्य गांवों का संपर्क टूट गया है। दोपहर तक ग्रामीण पुल की मरम्मत में लगे थे। यह नहर गजसिंहपुर इलाके से 28 एफएफ कंवरपुरा की तरफ जाती है। ग्रामीणों ने बताया कि पुल के टूटने के समय इस पर किसी वाहन अथवा व्यक्ति के नहीं होने से हादसा टल गया।

रोजगार शिविर बना औपचारिक, लोगों की भीड़ ही नहीं जुटी

- **प्रचार-प्रसार के अभाव में शिविर में इक्का दुक्का रोजगार लेने पहुंचे**
- **शिविर में ना कोई अधिकारी नजर आया तथा ना ही कोई बैंक के अधिकारी रोजगार देने को लेकर देखे गये**

जालोर, (कासं)। इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना के तहत काम पाओ अभियान के द्वितीय चरण के क्रियान्वयन के लिए शुक्रवार को जालोर नगर परिषद, भीनमाल, सांचौर व रानीवाड़ा नगरपालिका में रोजगार शिविरों का आयोजन हुआ। जालोर नगरपरिषद में आयोजित शिविर फ्लाप शो साबित हुआ। प्रचार–प्रसार के अभाव में शिविर में इक्का दुक्का रोजगार लेने पहुंचे।

जालोर नगरपरिषद के सभागार में आयोजित रोजगार शिविर में लोगो की भीड़ जुट नही पाई। शिविर में ना कोई अधिकारी नजर आया तथा ना ही कोई बैंक के अधिकारी रोजगार देने को लेकर देखे गये। शिविर में दोपहर तक सारी कुर्सी खाली नजर आई। नगरपरिषद के कार्मिक व अधिकारी भी शिविर को लेकर संवेदनशील नजर नही आये। कई लोग खाली कुर्सी देखकर वापस अपने घरो की तरफ चले गये। शिविर में श्रमिकों की शिकायतों व समस्याओं को सुनने वाला भी नजर नही आया। वहीं श्रमिकों के नए जॉब कार्ड के लिए भी श्रमिक इधर उधर भटकते नजर आये। शिविर में श्रमिकों के जनाधार कार्ड में बैंक खाता संख्या व आईएफएससी कोड का अपडेशन, श्रमिकों की भुगतान संबंधी समस्याओं का समाधान भी अधिकारियो की अनुपस्थिति से नही पाया। नगरपरिषद ने 'काम पाओ अभियान' के तहत आयोजित रोजगार मेले में केवल मात्र खानापूर्ति की।

जालोर नगरपरिषद में आयोजित शिविर में कुछ लोग ही रोजगार लेने पहुंचे।

शिविर के दौरान बाद में कार्मिको ने कागजी खानापूर्ति पूर्ण की। शहरी रोजगार गांरटी योजना के कार्य भी शहर में नगरपरिषद ने अपने चेहतो को देकर सरकार राशि का जमकर दुरपयोग किया जा रहा हैं। वहीं मेट भी फर्जी मेस्टरोल व श्रमिकों की फर्जी हाजरी भरकर सरकार राशि का जमकर दुरुपयोग किया जा रहा है। लेकिन परिषद में स्थाई आयुक्त की नियुक्ति नहीं होने से परिषद का कोई धोरी धणी नजर नहीं आ रहा है। शुक्रवार को शिविर औपचारिक बन रह गया।

उदयपुर में खिला दुर्लभ "सीता अशोक"

उदयपुर, (कासं)। रावण की लंका में स्थित अशोक वाटिका का वह वृक्ष जिसकी छांव तले बैठने तथा इसके फूलों की महक से देवी सीता के शोक का हरण हुआ था, इन दिनों उदयपुर जिले में भी अपनी मोहक आभा बिखेरने लगा है। दुर्लभ और औषधीय गुणों से युक्त यह वृक्ष उदयपुर शहर में कुछ स्थानों पर अपनी पूरे सौंदर्य के साथ पुष्पित हो चुका है और लोगों को आकर्षित कर रहा है। इस दुर्लभ सीता अशोक के पेड़ और पुष्पों को क्लिक किया है जनसंपर्क विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने।

इस दुर्लभ वृक्ष के बीजों से पौधे तैयार कर शहर में कई स्थानों पर रोपित कर इसकी वंशवृद्धि के कार्य में लगे हुए है सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक वीएस राणा। वर्तमान में सीता–अशोक (सराका इंडिका) नामक यह दुर्लभ वृक्ष राणा के हिरण मगरी सेक्टर 6 स्थित निवास के साथ ही कुछ अन्य स्थानों पर भी पुष्पित हुआ है।

करीब 12 साल पहले रोपे गए इस वृक्ष पर खिले नारंगी–लाल रंगों की फूलों की आभा देखते ही बन रही है। इसके अलावा 2 पेड़ आरसीए और एक स्वरूपसागर में इन दिनों पुष्पित होकर अपनी मनोहारी आभा बिखेर रहा है। राणा ने गत वर्षों में अपने निवास पर स्थित पेड़ से बीजों को संकलित कर एक दर्जन से अधिक पौधे तैयार कर शहर में विभिन्न लोगों को भी वितरित किए हैं।

पर्यावरणीय विषयों के जानकारों के अनुसार यह ही असली अशोक वृक्ष है। जिले में ऐसे कुछ वृक्ष ही हैं। इसके पुष्प, पत्तियों, छाल व फलों का उपयोग कई प्रकार की औषधियों के रूप में होता है। अशोक का फूल, छाल और मूल नाना प्रकार के औषधियां बनाने में काम आते हैं। विशेषकर विभिन्न प्रकार महिलाओं से संबंधित व्याधियों में अशोक के औषधीय गुण सर्व स्वीकृत है। अशोकासव, अशोकारिष्ट औषधियां अशोक से ही बनती है

सीता अशोक शो–प्लांट के रूप में लगाए जाने वाले लंबे अशोक से भिन्न है। यह आम के पेड़ जैसा छायादार वृक्ष होता है। इसके पत्ते 8–9 इंच लम्बे और दो–ढाई इंच चौड़े होते हैं। इसके पत्ते शुरू में तांबे जैसे रंग के होते हैं, इसीलिए इसे 'ताम्रपल्लव' भी कहते हैं। इसके नारंगी रंग के फूल वसंत ऋतु में आते हैं, जो बाद में लाल रंग के हो जाते हैं। सुनहरी लाल रंग के फूलों वाला होने से इसे 'हेमपुष्पा' भी कहा जाता है।

उदयपुर में शहर में पुष्पित हुआ सीता अशोक का वृक्ष।

राशिफल शनिवार 18 मार्च, 2023

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, श्रवण नक्षत्र रात्रि 12:29 तक, शिव योग रात्रि 11:53 तक, बालव करण दिन 11:14 तक, चन्द्रमा मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मीन, चन्द्रमा–मकर, मंगल–मिथुन, बुध–मीन, गुरू–मीन, शुक्र–मेष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 12:29 तक है। द्विपुष्कर योग रात्रि 12:29 से आरम्भ होगा। आज पापमोचनी एकादशी व्रत है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:07 से 9:36 तक, चर 12:35 से 2:04 तक, लाभ अमृत 2:04 से 5:03 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:37, सूर्यास्त 6:33

मेष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण संदेश प्राप्त होंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कन्या
परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। भावनात्मक कारणों से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
घर–परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

कुंभ
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। मन:स्थिति ठीक नहीं रहेगी। पारिवारिक परेशानियों के कारण दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार होगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।